ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor = 8.35, January-June 2026, Submitted in June 2026

'गोरखपुर जनपद के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का विश्लेषण'

पंकज कुमार दुबे, शोधार्थी शिक्षाशास्त्र विभाग दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर, pankajdu009@gmail.com
डॉ. विजेंद्र सिंह शोध निर्देशक एवं सहायक आचार्य, शिक्षाशास्त्र विभाग उदित नारायण पीजी कॉलेज पडरौना कुशीनगर

सारांश

शिक्षक गुणवत्ता शिक्षा प्रणाली की आधारशिला है। प्रस्तुत अध्ययन गोरखपुर जनपद के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का अनुभवजन्य विश्लेषण प्रस्तुत करता है। 10 माध्यमिक विद्यालयों से चयनित 400 विद्यार्थियों (200 छात्र एवं 200 छात्राएँ; 200 कला एवं 200 विज्ञान) पर 34-कथनीय 5-बिंदु Likert मापनी प्रशासित की गई। परिणाम दर्शाते हैं कि विद्यार्थियों की समग्र अभिवृत्ति सकारात्मक एवं सामान्य सहमति स्तर की है (मध्यमान = 129.56, SD = 16.48)। लिंग के आधार पर कोई सांख्यिकीय सार्थक अंतर नहीं पाया गया ($t = 0.71$, $p = 0.478$), जबकि विज्ञान वर्ग की अभिवृत्ति कला वर्ग की तुलना में सार्थक रूप से उच्च पाई गई ($t = 5.32$, $p < 0.001$)। ये निष्कर्ष शिक्षक-प्रशिक्षण नीतियों, प्रवेश मानदंडों, करियर मार्गदर्शन एवं माध्यमिक शिक्षा सुधार के लिए महत्वपूर्ण निहितार्थ रखते हैं।

मुख्य शब्द: अभिवृत्ति, अध्यापन व्यवसाय, माध्यमिक शिक्षा, शिक्षक आकांक्षा, लिकर्ट मापनी, t-परीक्षण, गोरखपुर, शिक्षक शिक्षा।

1. प्रस्तावना

शिक्षा व्यवस्था की सफलता मुख्य रूप से शिक्षकों की गुणवत्ता, प्रतिबद्धता, व्यावसायिक पहचान एवं अभिवृत्ति पर निर्भर करती है। अध्यापन व्यवसाय के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति प्रभावी शिक्षण व्यवहार, कक्षा प्रबंधन, व्यावसायिक संतुष्टि तथा दीर्घकालिक शिक्षक प्रतिधारण को प्रभावित करती है (Zaidi, 2015; Parvez & Shakir, 2013; Appadurai & Sarala Devi, 2015)। अभिवृत्ति व्यक्ति की मनोवृत्ति, रुचि एवं व्यवहारिक प्रवृत्ति का महत्वपूर्ण निर्धारक है। जब यह अभिवृत्ति अध्यापन व्यवसाय के प्रति सकारात्मक होती है, तो वह न केवल शिक्षण की गुणवत्ता को बढ़ाती है, अपितु शिक्षा प्रणाली की समग्र प्रभावकारिता को भी मजबूत करती है।

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी भविष्य के संभावित शिक्षकों का महत्वपूर्ण पूल गठित करते हैं। इस स्तर पर उनकी अभिवृत्ति का वैज्ञानिक अध्ययन शिक्षक-शिक्षा नीति निर्माण, प्रवेश मानदंडों के निर्धारण तथा करियर काउंसलिंग के लिए आधारभूत साक्ष्य प्रदान करता है (Bai & Kumar, 2023)। भारत में शिक्षक की कमी, गुणवत्ता संबंधी चुनौतियाँ एवं व्यावसायिक आकर्षण की कमी निरंतर चर्चा का विषय रही है। ऐसे परिप्रेक्ष्य में माध्यमिक विद्यार्थियों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का गहन विश्लेषण अत्यंत आवश्यक हो जाता है।

प्रस्तुत शोध गोरखपुर जनपद के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों पर केंद्रित है। यह अध्ययन न केवल समग्र अभिवृत्ति के स्तर को निर्धारित करता है, अपितु लिंग एवं शैक्षिक वर्ग (कला-विज्ञान) के आधार पर विद्यमान अंतरों की सांख्यिकीय जाँच भी करता है।

2. संबंधित साहित्य की समीक्षा

अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति पर राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पर्याप्त शोध हुआ है। Bhargava और Pathy (2014) तथा Chakraborty और Mandal (2014) ने छात्र-अध्यापकों में सामान्यतः सकारात्मक अभिवृत्ति पाई। Ilyas (2019) तथा D'Souza और Gupta (2019) के अध्ययनों में भी बी.एड. एवं डी.एल.एड. विद्यार्थियों की अभिवृत्ति मध्यम से उच्च स्तर की रिपोर्ट की गई।

लिंग संबंधी अध्ययनों में मिश्रित परिणाम सामने आए हैं। Shakoor और Farooq (2018) ने प्राथमिक विद्यालय शिक्षकों में लिंग के आधार पर कोई सार्थक अंतर नहीं पाया, जबकि कुछ अन्य अध्ययनों में महिला शिक्षकों की अभिवृत्ति अपेक्षाकृत अधिक सकारात्मक पाई गई। शैक्षिक पृष्ठभूमि एवं संकाय के प्रभाव पर Zaidi (2015) ने विस्तार से चर्चा की है।

Singh और Yadav (2018) तथा Singh और Singh (2016) ने उत्तर प्रदेश के संदर्भ में शिक्षकों की अभिवृत्ति का अध्ययन किया। Bai और Kumar (2023) ने शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों में प्रवेश मानदंडों की भविष्यवाणी क्षमता पर बल देते हुए अभिवृत्ति मापन के महत्व को रेखांकित किया। ये अध्ययन वर्तमान शोध के लिए सैद्धांतिक एवं अनुभवजन्य आधार प्रदान करते हैं।

3. शोध उद्देश्य

1.माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति समग्र अभिवृत्ति का स्तर निर्धारित करना।
2.लिंग (छात्र एवं छात्रा) के आधार पर अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

3.शैक्षिक वर्ग (कला एवं विज्ञान) के आधार पर अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4.अभिवृत्ति में लिंग एवं वर्ग संबंधी अंतरों की सांख्यिकीय सार्थकता की जाँच करना।

4. परिकल्पनाएँ

H_{o1}: माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
H_{o2}: माध्यमिक स्तर के कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

5. शोध विधि-

किसी भी शोध कार्य की विश्वसनीयता एवं प्रमाणिकता उसकी शोध विधि पर निर्भर करती है। शोध-विधि वह वैज्ञानिक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से शोधकर्ता अपनी शोध समस्या से संबंधित तथ्यों का संकलन, वर्गीकरण, विश्लेषण एवं व्याख्या करता है। चूँकि प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में अध्यापन व्यवसाय के प्रति माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति एवं अभिक्षमता ज्ञात करना था, इसलिए इस शोध में वर्णनात्मक अनुसंधान के तहत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का उद्देश्य किसी समूह, परिस्थिति अथवा घटना की वर्तमान स्थिति का अध्ययन करना होता है। इस विधि के अंतर्गत तथ्यों का संकलन कर उनका विश्लेषण एवं व्याख्या की जाती है। बेस्ट एण्ड काह्न (2006) के अनुसार वर्णनात्मक अध्ययन यह बताता और समझाता है कि 'क्या है?' इसका सम्बन्ध मौजूदा स्थितियों या संबंधों, लोगों की राय, चल रही प्रक्रियाओं, स्पष्ट प्रभावों या उभरते हुए रुझानों से होता है। वर्णनात्मक अनुसंधान का उद्देश्य किसी व्यक्ति, समूह, परिस्थिति, घटना अथवा समस्या की वर्तमान स्थिति का व्यवस्थित वर्णन करना होता है। इस प्रकार के अनुसंधान में तथ्यों का संकलन, वर्गीकरण, विश्लेषण एवं व्याख्या करके वास्तविक स्थिति को स्पष्ट किया जाता है।

6.जनसंख्या-

जनसंख्या से आशय उन समस्त व्यक्तियों अथवा इकाइयों से होता है जिन पर शोध किया जाना है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में माध्यमिक शिक्षा परिषद प्रयागराज, उत्तर प्रदेश द्वारा संचालित गोरखपुर जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में कक्षा 12 में अध्ययनरत विज्ञान एवं कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं को जनसंख्या के रूप में लिया गया है।

7.प्रतिदर्श एवं प्रतिदर्शन विधि-

सम्पूर्ण जनसंख्या का अध्ययन करना समय, श्रम एवं व्यय की दृष्टि से कठिन होता है। अतः जनसंख्या में से कुछ प्रतिनिधि इकाइयों का चयन किया जाता है, जिसे प्रतिदर्श कहा जाता है। प्रस्तुत शोध में प्रतिदर्श चयन हेतु बहुस्तरीय प्रतिदर्शन प्रक्रिया अपनाई गई है।
प्रतिदर्शन हेतु सर्वप्रथम गोरखपुर जनपद में स्थित माध्यमिक विद्यालयों की सूची प्राप्त की गई। तत्पश्चात गोरखपुर जनपद के कुल 19 विकास खण्डों में से लगभग 50 प्रतिशत अर्थात् 10 विकास खण्डों का चयन यादृच्छिक प्रतिदर्शन विधि की लॉटरी तकनीक द्वारा किया गया। इसके उपरान्त प्रत्येक चयनित विकास खण्ड से एक-एक माध्यमिक विद्यालय का चयन विद्यालयों की सूची के आधार पर पुनः यादृच्छिक प्रतिदर्शन विधि की लॉटरी तकनीक द्वारा किया गया। अन्ततः चयनित विद्यालयों से कक्षा 12 में अध्ययनरत विज्ञान एवं कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं में से समान अनुपात में कुल 400 विद्यार्थियों (छात्र = 200, छात्रा = 200; कला = 200, विज्ञान = 200)का चयन उद्देश्यपरक प्रतिदर्शन विधि द्वारा किया गया। इस प्रकार प्रतिदर्श में लिंग एवं वर्ग का समान प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया गया।

7.उपकरण

प्रस्तुत शोध में संबंधित आंकड़ों को एकत्रित करने के लिए शोधकर्ता द्वारा स्व निर्मित 34 कथनों वाली अभिवृत्ति मापनी जो 5-बिंदु लिकर्ट मापनी- जो पूर्ण सहमत, सहमत, अनिश्चित, असहमत,पूर्ण असहमत पर आधारित है, का प्रयोग किया गया।सैद्धांतिक मध्य बिंदु = 102। उच्च अंक अधिक सकारात्मक अभिवृत्ति को दर्शाते हैं।

8.विश्वसनीयता एवं वैधता-

अभिवृत्ति मापनी की विश्वसनीयता ज्ञात करने के लिये 34 कथनों के मापनी को 180 विद्यार्थियों पर परीक्षण किया गया। इसके पश्चात एसपीएसएसएस के माध्यम से प्राप्त आँकड़ों का क्रोनबैच अल्फा गुणांक ज्ञात किया गया, जिसका मान 0.84 आया। यह मान अभिवृत्ति मापनी के विश्वसनीयता को दर्शाता है।
अभिवृत्ति मापनी की वैधता ज्ञात करने हेतु पूरे 34 कथनों के परीक्षण विषयवस्तु वैधता इन्डेक्स ज्ञात किया गया। जिसके लिये सूत्र निम्नवत् है–
सभी 34 कथनों की विषयवस्तु वैधता इन्डेक्स का जोड़ / 34 = अभिवृत्ति मापनी की विषयवस्तु वैधता इन्डेक्स
उपरोक्त सूत्र के आधार पर इस अभिवृत्ति मापनी की विषयवस्तु वैधता इन्डेक्स 0.91 प्राप्त हुआ, जोकि इस उपकरण की वैधता को दर्शाता है।

ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor = 8.35, January-June 2026, Submitted in June 2026

9.अंकन एवं विश्लेषण -

विश्लेषण के प्रथम चरण में कुल 34 कथनों की अभिवृत्ति मापनी को रेटिंग के उपरान्त विद्यार्थियों से प्राप्त करने के पश्चात प्रत्येक प्रयोज्य द्वारा प्राप्त अभिवृत्ति मापनी उपकरण के प्रत्येक सकारात्मक कथन के सापेक्ष पूर्ण सहमत हेतु 05 अंक, सहमत हेतु 04 अंक, अस्पष्ट हेतु 03 अंक, असहमत हेतु 02 अंक एवं पूर्ण असहमत हेतु 01 अंक निर्धारित किये गये एवं प्रत्येक नकारात्मक कथनों के सापेक्ष पूर्ण सहमत हेतु 01 अंक, सहमत हेतु 02 अंक, अस्पष्ट हेतु 03 अंक, असहमत हेतु 04 अंक एवं पूर्ण असहमत हेतु 05 अंक दिये गये। इस प्रकार 34 कथनों की अभिवृत्ति मापनी के सापेक्ष सभी विद्यार्थियों का अलग-अलग कुल प्राप्तांक प्राप्त किया गया। इसप्रकार इस परीक्षण में विद्यार्थियों के न्यूनतम अंक 34 और अधिकतम अंक 170 हो सकते थे।

आँकड़ों के विश्लेषण और व्याख्या के क्रम में सर्वप्रथम प्रत्येक विद्यार्थी का कुल प्राप्तांक ज्ञात किया गया। इसके उपरान्त प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान और मानक विचलन ज्ञात किया गया।

इसके साथ ही मापनी का सैद्धान्तिक मध्य बिन्दु एवं प्रति कथन मध्यमान ज्ञात किया गया जिसका सूत्र निम्नलिखित है–

- प्रति कथन मध्यमान = मध्यमान ÷ 34
- मापनी का सैद्धान्तिक मध्य बिन्दु = 34 × 3

इसके उपरान्त शोधार्थी द्वारा आँकड़ों की व्याख्या हेतु एनपीसी के सिद्धान्त का निर्धारण किया गया जो कि निम्न लिखित सूत्र पर आधारित है–

- निम्न स्तर = मध्यमान – 1मानक विचलन
- मध्यम स्तर = मध्यमान ± 1मानक विचलन
- उच्च स्तर = मध्यमान – 1मानक विचलन

इसके पश्चात कुल प्राप्तांको की आवृत्ति की गणना की गई। इससे यह ज्ञात हुआ कि कितने विद्यार्थी किस स्तर में आते हैं। इस प्रकार उपरोक्त तरीके से माध्यमिक विद्यालयों में अध्यनरत विद्यार्थियों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति के स्तर की व्याख्या की गई।

10. प्रयुक्त सांख्यिकी -

प्रस्तुत शोध अध्ययन में मुख्य रूप से निम्नलिखित सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया गया

- मध्यमान,
- मानक विचलन,
- प्रतिशत वितरण
- स्वतंत्र प्रतिदर्श t-परीक्षण ($\alpha = 0.05$, df = 398)।

सांख्यिकीय प्रविधियों द्वारा प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण Microsoft Excel द्वारा किया गया।

11. परिणाम- 11.1 समग्र अभिवृत्ति-

तालिका 1: समग्र अभिवृत्ति के सांख्यिकीय सूचक

संकेतक	मान
विद्यार्थियों की संख्या(N)	400
मध्यमान(M)	129.56
मानक विचलन(SD)	16.48
सैद्धांतिक मध्य बिंदु	102
प्रति कथन मध्यमान	3.81

तालिका 2: अभिवृत्ति का स्तर-वितरण

स्तर	अंकों की सीमा	विद्यार्थियों की संख्या	विद्यार्थियों का प्रतिशत
निम्न स्तर	34-113	65	17
मध्यम स्तर	114-145	259	64
उच्च स्तर	145-170	76	19

समग्र मध्यमान सैद्धांतिक मध्य बिंदु (102) से स्पष्ट रूप से उच्च है। 83% विद्यार्थी मध्यम या उच्च अभिवृत्ति स्तर पर हैं, जो सकारात्मक प्रवृत्ति को इंगित करता है। मानक विचलन का अपेक्षाकृत कम मान मतों में पर्याप्त एकरूपता दर्शाता है।

11.2 लिंग एवं वर्ग के आधार पर अभिवृत्ति

तालिका 3: उप-समूहों की अभिवृत्ति

समूह	कुल संख्या (N)	मध्यमान(M)	मानक विचलन(SD)	निम्न %	मध्यम %	उच्च %
छात्राएं	200	128.97	16.88	17.5	62.0	20.5
छात्र	200	130.14	16.08	15.0	67.5	17.5
कला वर्ग	200	125.32	16.07	22.5	63.5	14.0
विज्ञान वर्ग	200	133.80	15.81	10.0	66.0	24.0

विज्ञान वर्ग का मध्यमान सर्वाधिक (133.80) तथा कला वर्ग का सबसे कम (125.32) है। विज्ञान वर्ग में उच्च अभिवृत्ति वाले विद्यार्थियों का प्रतिशत भी अधिक (24%) है।

11.3 परिकल्पनाओं का परीक्षण

तालिका 4: t-परीक्षण परिणाम

तुलना	t- मान	df	p-मान	निष्कर्ष
छात्र बनाम छात्रा	0.71	398	0.478	असार्थक (H_{01} स्वीकृत)
विज्ञान बनाम कला	5.32	398	0.000	सार्थक (H_{02} अस्वीकृत)

लिंग के आधार पर कोई सार्थक अंतर नहीं है। इसके विपरीत, विज्ञान वर्ग की अभिवृत्ति कला वर्ग की तुलना में सांख्यिकीय रूप से सार्थक रूप से उच्च है (मध्यमान अंतर = 8.48)।

12. चर्चा

अध्ययन के परिणाम दर्शाते हैं कि गोरखपुर जनपद के माध्यमिक विद्यार्थियों में अध्यापन व्यवसाय के प्रति सामान्यतः सकारात्मक अभिवृत्ति विद्यमान है। यह निष्कर्ष उन अध्ययनों से सुसंगत है जिन्होंने छात्र-अध्यापकों एवं भावी शिक्षकों में मध्यम से उच्च अभिवृत्ति रिपोर्ट की है (Ilyas, 2019; D'Souza & Gupta, 2019; Bhargava & Pathy, 2014; Chakraborty & Mandal, 2014; Babu & Raju, 2013; Manju, 2016)।

लिंग-तटस्थ परिणाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। Shakoor और Farooq (2018) के निष्कर्षों के अनुरूप, वर्तमान अध्ययन भी इंगित करता है कि अध्यापन व्यवसाय के प्रति रुचि अब पारंपरिक लिंग रूढ़ियों से मुक्त होती जा रही है। यह सामाजिक परिवर्तन एवं शिक्षा के क्षेत्र में लिंग समानता की दिशा में सकारात्मक संकेत है।

कला एवं विज्ञान वर्ग के बीच स्पष्ट एवं सार्थक अंतर शैक्षिक संकाय की निर्णायक भूमिका को रेखांकित करता है। विज्ञान वर्ग की उच्च अभिवृत्ति संभवतः उनकी समस्या-समाधान उन्मुख सोच, विषय की व्यावहारिक एवं प्रयोगात्मक प्रकृति, तथा सामाजिक प्रतिष्ठा की धारणा से संबंधित हो सकती है। Zaidi (2015) ने भी अभिवृत्ति को प्रभावित करने वाले कारकों में शैक्षिक पृष्ठभूमि को महत्वपूर्ण माना है।

निम्न अभिवृत्ति समूह (17%) तथा कला वर्ग में अपेक्षाकृत अधिक निम्न अभिवृत्ति वाले विद्यार्थी (22.5%) नीति-निर्माताओं के लिए गंभीर चिंता का विषय हैं। Bai और Kumar (2023) द्वारा प्रस्तावित प्रवेश मानदंडों की भविष्यवाणी क्षमता को ध्यान में रखते हुए, अभिवृत्ति मापन को शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों में औपचारिक स्थान देना आवश्यक प्रतीत होता है।

13. निष्कर्ष एवं व्यावहारिक निहितार्थ

प्रस्तुत अध्ययन निम्नलिखित निष्कर्ष स्थापित करता है:

1.माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति समग्र रूप से सकारात्मक एवं सामान्य सहमति स्तर की है।

2.लिंग अभिवृत्ति का निर्णायक कारक नहीं है; छात्र एवं छात्राओं की अभिवृत्ति लगभग समान है।

3.शैक्षिक वर्ग (विज्ञान बनाम कला) अभिवृत्ति को सार्थक रूप से प्रभावित करता है; विज्ञान वर्ग की अभिवृत्ति कला वर्ग की तुलना में स्पष्ट रूप से उच्च है।

4.अधिकांश विद्यार्थी (64%) मध्यम अभिवृत्ति स्तर पर हैं, जिन्हें लक्षित हस्तक्षेप द्वारा उच्च स्तर की ओर ले जाया जा सकता है।

14.नीतिगत एवं व्यावहारिक सुझाव:

1.माध्यमिक स्तर पर संरचित करियर काउंसलिंग एवं अध्यापन व्यवसाय अभिविन्यास कार्यक्रम अनिवार्य किए जाएँ।
2.कला वर्ग के विद्यार्थियों के लिए विशेष अभिवृत्ति-सुधार मॉड्यूल एवं प्रेरणा कार्यक्रम विकसित किए जाएँ।
3.शिक्षक-प्रशिक्षण संस्थानों में प्रवेश प्रक्रिया में अभिवृत्ति मापन को औपचारिक एवं निर्णायक स्थान दिया जाए।
4.निम्न अभिवृत्ति वाले विद्यार्थियों को वैकल्पिक करियर विकल्पों की ओर भी संवेदनशील रूप से मार्गदर्शित किया जाए।
5.सफल शिक्षकों की जीवंत कहानियों, प्रायोगिक अनुभवों एवं विद्यालय-आधारित इंटर्नशिप के माध्यम से अभिवृत्ति को और सशक्त बनाया जाए।
6.शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम में अभिवृत्ति निर्माण संबंधी घटकों को सुदृढ़ किया जाए।

15. शोध की सीमाएँ एवं भावी शोध हेतु सुझाव

प्रत्येक शैक्षिक शोध की कुछ सीमाएं होती हैं। प्रस्तुत शोध की प्रमुख सीमाएं निम्नलिखित हैं जिन्हें भावीं शोध में दूर करने का प्रयास किया जा सकता है-
1.अध्ययन भौगोलिक रूप से गोरखपुर जनपद तथा 10 विद्यालयों तक सीमित है, अतः व्यापक सामान्यीकरण में सावधानी अपेक्षित है। आत्म-रिपोर्ट मापनी की सीमाएँ भी विद्यमान हैं।
2. प्रतिदर्श का आकार यद्यपि 400 विद्यार्थियों का है और सांख्यिकीय दृष्टि से पर्याप्त है फिर भी बड़े एवं अधिक प्रतिनिधिक प्रतिदर्श से परिणाम और अधिक विश्वसनीय हो सकते थे।
3.भविष्य में बहु-जनपदीय, अनुदैर्ध्य एवं मिश्रित-विधि अध्ययन किए जा सकते हैं।
4.अभिवृत्ति के निर्धारक कारकों—पारिवारिक पृष्ठभूमि, शिक्षक मॉडल, मीडिया प्रभाव, सामाजिक-आर्थिक स्थिति एवं विद्यालय वातावरण—का गहन विश्लेषण आवश्यक है।
5.अभिवृत्ति एवं वास्तविक शिक्षण व्यवहार के बीच संबंध का अध्ययन भी महत्वपूर्ण शोध दिशा हो सकती है।

सन्दर्भ -

1. Bai, N., & Kumar, S. (2023). Predictive efficiency of admission criteria for teacher education programme. International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS), 5(4-I), 71–75.
2. D'Souza, P. P., & Gupta, G. G. (2019). A study of the attitude of B.Ed. and D.El.Ed. students towards teaching. Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (JETIR).
3. Ilyas, S. (2019). A study of the attitude of B.Ed. students towards teaching profession. Review of Research, 8(8).
4. Ojha, G., & Verma, M. (2018). A study of the attitude of college teachers towards teaching profession. International Journal of Scientific Research in Science and Technology, 4(7).
5. Singh, P., & Yadav, D. K. (2018). A comparative study of the attitude of teachers of government and non-government aided secondary schools towards teaching profession. International Journal of Scientific Research in Science and Technology, 4(7).
6. Srivastava, M. B. (1990). Effect of teacher education programmes on student teachers' attitude towards teaching aptitude. Fifth Survey of Educational Research, 1988–92, Vol. 2, NCERT, New Delhi, pp. 1475–1480.
7. Shakoor, U., & Farooq, I. A. (2018). A comparative study of the attitude of male and female primary school teachers towards teaching profession. Journal of Education and Educational Development, 5(2).
8. Barua, P., & Gogoi, M. (2017). Attitude towards teaching profession in relation to adjustment of secondary school teachers of Dibrugarh district. International Journal of Humanities and Social Science Studies (IJHSSS), 3, 166–177.
9. Manju, N. D. (2016). Attitude of student-teachers towards teaching profession. Asian Journal of Development Matters, 10(1), 10–19.

10. Kumar, R. V. (2016). Attitude of postgraduate students towards teaching profession. MIER Journal of Educational Studies Trends and Practices, 193–203.
11. Singh, O. P., & Singh, S. K. (2016). A study of the attitude of primary school teachers of Varanasi district of Uttar Pradesh towards teaching profession. International Journal of Advanced Research in Management and Social Sciences, 5(8), 119–129.
12. Appadurai, R., & Sarala Devi, K. (2015). A study of teaching aptitude and teacher attitude on teacher effectiveness. International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology, 4(10), 10252–10261.
13. Zaidi, Z. I. (2015). Factors affecting attitude towards teaching and its correlates: A research review. International Journal of Education and Psychological Research (IJEPR), 4(1), 46–51.
14. Bhargava, A., & Pathy, M. K. (2014). Attitude of student teachers towards teaching profession. Turkish Online Journal of Distance Education, 15(3), 27–36.
15. Chakraborty, A., & Mandal, B. C. (2014). Attitude of prospective teachers towards teaching profession. American Journal of Social Sciences, 2(6), 120–125.
16. Khurshid, K., Gardezi, A. R., & Noreen, S. (2014). A study of the attitude of M.A./M.Sc. university students towards teaching profession. VFAST Transactions on Education and Social Sciences, 2(1), 27–34.
17. Parvez, M., & Shakir, M. (2013). Attitudes of prospective teachers towards teaching profession. Journal of Education and Practice, 4(10), 172–178.
18. Babu, B. P., & Raju, T. J. M. S. (2013). Attitude of student teachers towards their profession. International Journal of Social Science and Interdisciplinary Research, 2(1), 1–6.
19. Maheshwari, A. (2013). A study of the attitude of prospective teachers towards teaching profession. International Research Journal of Commerce, Arts and Science, 4(3), 601–609.
20. Sindhu, T. (2013). A study of teachers' attitude towards teaching profession and work commitment (Unpublished Ph.D. thesis). Shri Jagdishprasad Jhabarmal Tibrewala University.
21. मंगल, एस. के. (2019). शिक्षा मनोविज्ञान। पीएचआई लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड।
22. मंगल, एस. के. (2021). शिक्षा अनुसंधान की आधारभूत संकल्पनाएँ एवं सांख्यिकी। पीएचआई लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड।
23. पाण्डेय, के. पी. (2015). शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक मापन। विनोद पुस्तक मन्दिर।
24. पाण्डेय, गोविन्द प्रसाद. (2010). शैक्षिक अनुसंधान। आगरा बुक स्टोर।
25. शर्मा, आर. ए. (2017). शिक्षा अनुसंधान। आर. लाल बुक डिपो।
26. शर्मा, आर. ए. (2019). शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक मापन। आर. लाल बुक डिपो।
27. सिंह, अरुण कुमार. (2015). मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में अनुसंधान विधियाँ। मोतीलाल बनारसीदास।
28. गुप्ता, एस. पी., एवं गुप्ता, ए. (2020). अनुसंधान संदर्शिका: सम्प्रत्यय, कार्यविधि एवं प्रविधि. शारदा पुस्तक भवन.